कविता / युद्ध : एक बच्चे की फरियाद

जयपाल

हे भगवान तुम्हारा घर कहां है
कितनी दूर है यहां से
मैं तुमसे मिलना चाहता हूं
एक बात तुम्हें बतानी है
यहां के राजा के बारे में
जिसको भेजा हुआ है तुमने
हमारी सुरक्षा के लिए

कल उसके सैनिक हमारे शहर में आए
और बम फोड़ कर चले गए
हमारा घर जल गया
मेरे माता-पिता भी जल गये
लोग कहते हैं..
%तेरे माता-पिता राख हो गए%
पर मैं अपने माता-पिता को राख कैसे कहूं
मुझे नहीं पता लोग राख क्यों कहते हैं

बहन घर से दूर खाली जगह पर खेल रही थी
वहां भी एक धमाका हुआ
वह फिर दिखाई नहीं दी
लोग कहते हैं
वह गेंद की तरह हवा में उड़ी थी
समझ नहीं आता
लोग मेरी बहन को गेंद क्यों कहते हैं

मैं तो स्कूल में था सो बच गया
स्कूल के मेरे एक दोस्त ने बताया है
वह अब नीचे नहीं आएगी
क्योंकि वह अब भगवान के पास चली गई है
वह कहता है भगवान ऊपर रहते है

मुझे बताओ भगवान जी
तुम यहां से कितनी ऊपर हो
मेरे दोस्त का घर तीन मंजिला है
मैं आखरी मंजिल की छत पर
तुमसे आकर मिलूंगा
वहां मेरी बहन मुझे दे देना
फिर हम दोनों भाई-बहन
यहां से कहीं दूर
बहुत दूर चले जायेंगे
इतनी दूर...इतनी दूर कि बस ..!
जहां से हम दोनों दिखाई न दे
किसी राजा या महाराजा को

व्यंग्य

ब्रह्मा का शाप

हरिमोहन झा

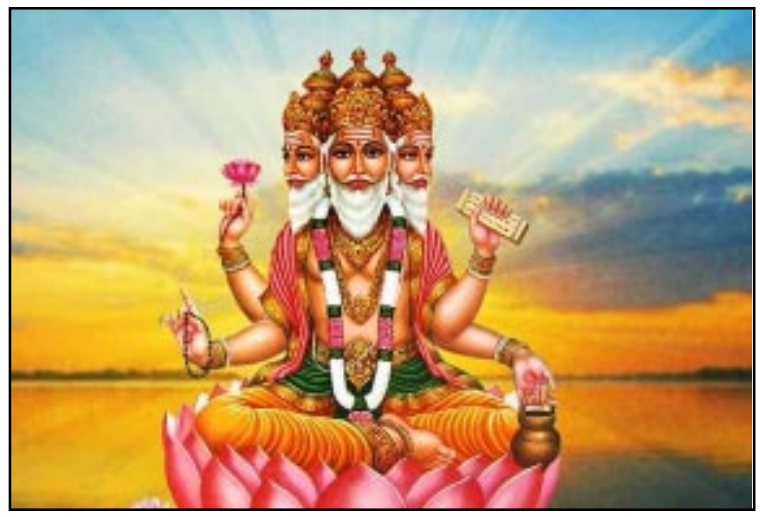

एक दिन ब्रह्मा मनुष्य के मूर्ति 'गढ़' रहे थे। इसी बीच ब्रह्मा ने भांग पी ली। भांग ज्यादा तेज थी, ब्रह्मा को तुरन्त खूब नशा चढ़ गया और जैसे शिवजी तांडव-नृत्य करते हैं ठीक उसी तरह 'भांडव' नृत्य करने लगे। सम्पूर्ण ब्रह्मलोक डोल गया। उस नशे की तरंग में सृष्टिचालक भांड सब उलट-पलट कर चकनाचूर होने लगे और नशे की तरंग में ब्रह्मा को पता नहीं चला कि क्या कर रहे हैं। जब एक दिन बाद इन्हें होश आया तो देखा कि महा अनर्थ हो गया है।

विषधर गढ़ने के लिये एक मटका विष रखा हुआ था, वो मटका फूटकर काले विष की धार लह-लह करते हुए बह रही थी। मनुष्य के मस्तिष्क में एक बूंद बुद्धि का तेजाब देना था, वो भरा हुआ मटका फूट कर विष के साथ मिल गया। ऊपर से ईर्ष्या अर्क, द्वेष सिरका, निंदा का नौसादर, कटु-नीति का काढ़ा सब उसमें मिलकर एकाकार हो गए। मनुष्य गढ़ने वाली मिट्टी, जिस पानी से मिलानी थी वो उस भयंकर मिश्रण में मिल गया। भांग के नशे में बूढ़े ब्रह्मा को कुछ समझ नहींआया। उन्होंने गेहुअन सांप को मरोड़ कर अंतड़ी बना दी, हृदय में विषपिपरी का छत्ता रख दिया, कंठ में शंख, जीभ में बिच्छू का डंक, और होंठ पर लौंगिया मिर्च का बुकनी छिड़क दी।

नशा टूटने पर अपना भीषणकृत्य देख ब्रह्मा अपने चारो मुंह फाड़ दिये और भय के मारे उनका आठो आंखें पथरा गईं। परन्तु अब क्या हो? जब तक इन्हें पता चलता तब तक मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी थी।

सजीव होते ही मूर्ति लगी ब्रह्मा की फजीहत करने:- 'ए बकलोल तुम अपने को बहुत बुद्धिमान समझते हो?अपने मुंह देखो, स्वयं तो चार मुंह रखोगे, बाकी लोग एक ही रखेंगे'। परन्तु चार मुंह रखने से क्या होगा? हम एक मुंह से जितना चिल्लाएंगे उतना तुम चार मुंह से भी नहीं चिल्ला सकोगे। रे मूर्ख,' ऐसा कहकर ब्रह्मा की गरदन पकड़ ली।

अब ब्रह्माजी जान बचाकर दौड़े-दौड़े इन्द्र के दरबार में पहुंचे, मूर्ति भी ब्रह्मा को खदेड़ते हुए वहीं जा पहुंची। इन्द्र ने पूछा, क्या बात है? ब्रह्मा बोले महाराज! मैंने भांग के जोश में एक मनुष्य गढ़ा, वो हमसे भी ज्यादा तेज निकला और अब ये भस्मासुर की तरह मेरे ही माथे पर हाथ दे रहा है।

अब इन्द्र ने मूर्ति से पूछा क्यों जी? क्या बात है?

मूर्ति बोली एकांत में कहेंगे, उधर चलिए। वहां से नन्दन वाटिका जा कर इन्द्र के कान में कहने लगी, इस ब्रह्मा को बुद्धि नहीं है और बकलोल भी है। देखिये न, आपकेएरावत 'हाथी' को कान तो दिये सूप जैसे लेकिन आंख बकरी से भी छोटी, और नाक इतनी बड़ी बना दी कि भूमि पर लोटते हुए चलती है इससे और बड़ी मूर्खता क्या होगी?

इन्द्र कहने लगे हां, तुम ठीक कह रहे हो। मूर्ति कहने लगी-महाराज! इस ब्रह्मा को सरसों भर बुद्धि होती तो हाथी को चार पैर और मकड़ा को आठ पैर देते? मेरे और आपको दो पैर व कनखजुरा को सहस्र पैर, इन्हें अनुपात का ज्ञान नहीं है, नहीं तो जिराफ की उतनी बड़ी गरदन और गदहे के माथे पर वैज्यंती के पत्ते जैसा कान।

इन्द्र बोले-हां जी, अब तो मुझे भी पता चला कि ब्रह्मा भारी मूर्ख है।

मूर्ति बोली-महाराज! यदि इनकी बेवकूफ़ी की गिनती करूं तो वेद से ऊपर निकल जाएंगी। इतना सुंदर मयूर बना कर खोरनाठ जैसा पैर गढ़ दिये। मधुरभाषी कोयल को कोयले जैसी काली कुरूप बना दिये। ऐसे सुगंधित चंदन के वृक्ष में फूल नहीं लगाने को हुआ, मीठे अनार में गूदा कड़वा बना दिया, शरीफा बनाया तो गूदे से ज्यादा आंठी भर दिये, बेल में इतना ज्यादा लस्सा देने का क्या काम था? मखाना के पत्ते में कांटा देना कौन सा प्रयोजन था, सिंही-मांगुर मछली में सींग नहीं देते तो इनका क्या बिगड़ जाता? बढिया तालाब में फूल नहीं और कीचड़ में कमल। ब्रह्मा की बुद्धि को कहा नहीं जाए। समझिये तो ब्रह्मा को ब्राह्मी घृत का सेवन करना चाहिए।

जब ब्रह्मा ने देखा कि मूर्ति इन्द्र को अपनी तरफ़ मिला लिया तो वो अपने चारो मुंह फुलाए हुए महारानी की अर्चना करने पहुंचे गए। वहां भी मूर्ति साथ गई और महारानी से कान में फुसफुसा कर कहने लगी, ये ब्रह्मा लुच्चा है। देखिए सृष्टि प्रणाली ऐसी अश्लील बनाई कि पुत्र और मूत्र कहीं एक ही रास्ते से बाहर आये। दूसरा पुरुष को थोड़ा भी कष्ट नहीं, और स्त्री को दस महीने तक जो कष्ट भोगवाते हैं वो तो स्त्री बेचारी ही जानती है। अब स्त्री ब्रह्मा से जवाब मांगी तो उनके मुंह से एक शब्द नहीं निकला।

अब ब्रह्मा वहां से भागे-भागे चन्द्रमा के दरबार में आए। मूर्ति ने यहां भी इनका पीछा नहीं छोड़ा वो चन्द्रमा से कहने लगी देखिए ब्रह्मा बुड्ढा हो गया खुटुकचाल अभी तक नहीं गई है। आपका अभ्युदय इनसे देखा नहीं जाता है। ये ब्रह्मा इतना भारी दुष्ट है कि जब आप पूर्णिमा पर पहुंचते कि ये आपको अपना नख से ऐसा खुरचने लगता है कि खुरचते खुरचते जब तक अमावास्या पर नहीं पहुंचाता तब तक इसे चैन नहीं आता। इसने आपके इतने सुंदर चमकते मुखमण्डल में धब्बा लगा दिया और इससे भी संतोष नहीं हुआ तो राहु बना कर उसे भी लगा दिया।

अब ब्रह्मा यहां से तारालोक में गये वहां भी मूर्ति ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वहां सभी तारों को सम्बोधित करते हुए कहा- देखिये दुष्ट ब्रह्मा की करतूत, चन्द्रमा को रुपया का आकार दिया और तुमको सरसों जैसा आकाश में बिखरा दिया। ब्रह्मा भारी दुष्ट व दरिद्र है, इनके पास इतनी सामग्री नहीं थी कि आपको चवन्नी-दुअन्नी भर भी बना देते? वहां सभी तारे मिलकर ब्रह्मा का दूर छी करने लगे। अब ब्रह्मा यहां से भाग कर सूर्य लोक पहुंचे, साथ पहुंची मूति सूर्य से कहने लगी कि इस ब्रह्मा ने आपको सात घोड़ों के रथ पर दौड़ाते-दौड़ाते बेदम कर दिया, वो खुद कमलासन पर बैठा रहता है और आपको दौराहा जैसा दिन भर दौड़ाता रहता है। रविवार के दिन भी आपको छुट्टी नहीं। इनकी जगह दूसरा होता तो हप्ते में एक दिन की छुट्टी अवश्य देता। मूर्ति की बात मे आए सूर्य को नेत्र से तीव्र ज्वाला बहाते देख ब्रह्मा यहां से भागे। वो अग्नि लोक, वरुण लोक, यम लोक सभी जगह गये, किन्तु कहीं शरण नहीं मिली, कारण वो मूर्ति छाया की तरह इन्हें पीछे-पीछे सभी जगह गई।

अग्नि से कहा-ब्रह्मा आपको सतत जलाता रहता है। सात जीभ दे दीं, इसीलिये आपको सर्वभक्षी बनना पड़ा। वरुण से कहा- ई ब्रह्मा बहुत दुष्ट है, संसार भर का सोंस, जोंक, घड़ियाल आपके साम्राज्य में भर दिए है। यम से कहा कि ये ब्रह्मा अपने को प्रजापति कहलवा कर अपनी पूजा करवाता है और आपको भैंसे पर चढ़ाकर हाथ में कुल्हाड़ी देकर हत्यारों का काम लेता है।

ब्रह्मा ने देखा कि सभी देवता बागी होते जा रहे हैं तो विष्णु की शरण में पहुंचे, मूर्ति वहां भी पहुंचकर विष्णु से कहने लगी कि आप पालनकर्ता हैं। परन्तु जिस हिसाब से ब्रह्मा लोक गढ़ते हैं, देखने से लगता है कि ये पूरे क्षीरसागर फोंफी लगाकर आपसे सुड़कवाते हैं। इतना ही नहीं ये आपका घर फुटकाने वाला है शेषनाग और गरुड़ में इतना बैर करा दिया है कि दोनों एक दूसरे के जानी दुश्मन हैं। आपके चार बाहु देख कर सहस्रबाहु नामक राक्षस गढ़ दिया, ऐसा दुष्ट है।

इस रवैया को देखते हुए ब्रह्मा चुपचाप खिसक कर लक्ष्मी दरबार में पहुंचे। यहां मूर्ति लक्ष्मी से कहने लगी कि देखिये इस बुड्ढे का विवेक। आपकी सौत सरस्वती को हंसवाहिनी बना दिया और आपके लिये उल्लू छोड़कर दूसरा कुछ नहीं मिला।

ऐसा देख ब्रह्मा शिवलोक पहुंचे। मूर्ति वहां जाकर शिवजी से कहने लगी कि बाबा आप चतुर्मुख हैं, पंचमुख हैं यही देख कर ब्रह्मा आपसे जलता है। आपके प्रिय फूल अकौन-धतूर में इसने जान बूझकर सुगंध नहीं दी, ऐसा दुष्ट है। शिवजी के तृतीय नेत्र खोलने से पहले ब्रह्मा वहां से भागे-भागे अपने आंगन पहुंचे और हताश होकर गिर गये। ब्रह्माणी ने पूछा, क्या हुआ? ब्रह्मा बोले वही मूर्ति चली आ रही है। ब्रह्माणी बोली- आज आप अपना कमंडल क्यों भूल गये? जल छींट कर शाप दे दीजिये, मृत्युलोक में चली जाएगी।

अब ब्रह्मा अपना कमंडल लेने दौड़े, तब तक मूर्ति ब्रह्माणी के पास जाकर कहने लगी। ई ब्रह्मा बूढ़ा हो गया है, इसका पुराण-सांचा सभी रद्दी हो चुका है। अब ये पेंशन लेकर घर बैठे। इस बूढ़े से कहीं सृष्टि का काम चलेगा? अब ये शिथिल हो गया है, इसमें अब सामर्थ्य नहीं रही। देखिये हम इनकी जगह पर बैठ कर कैसा काम कर रहे हैं। इस प्रकार मूर्ति ब्रह्माणी को पटिया रही थी कि ब्रह्मा ने पीछे से एक चुल्लू जल छींट कर मूर्ति को शाप दे दिया। मूर्ति धप्प से मृत्युलोक में जाकर गिरी।

ब्रह्मा को मौका मिला, शाप दिये कि जाओ अब तुम एक से अनेक होना और अनेक होकर पूरे जन्म आपस में एक दूसरे से कटाउझ करते रहना। बुद्धि के तर्क में तुमसे कोई नहीं जीत पाएगा। किन्तु ये बुद्धि तुम सब आपस में लड़ने में खर्च करना। ए यावच्द्र दिवाकरी, ये शाप मनुष्य में छूटने वाला नहीं।

(मैथिली से हिन्दी में अनुवाद नीलिमा झा)